आखर हिंदी पत्रिका e-ISSN-2583-0597 खंड 3/अंक 2/मार्च 2023
Received: 18/03/2023; Accepted: 19/03/2022; Reviewed: 20/03/2023 Published: 24/03/2023

समय की रेत पर कन्नड़ लोरी के अमिट निशान

- डॉ. सुमा टी. रोडनवर
सहायक प्राध्यापिका एवं समंवयक,
हिंदी विभाग,
युनिवर्सिटि कॉलेज, हम्पनकट्टा,
मंगलूरु

डॉ. सुमा टी. रोडनवर, समय की रेत पर कन्नड़ लोरी के अमिट निशान, आखर हिंदी पत्रिका, खंड3/अंक 2/मार्च 2023,(201-206)

साहित्य के क्षेत्र में अनेक विधाएं आते हैं, जिनमें बाल साहित्य का अपना ही एक महत्वपूर्ण स्थान है। बड़े- बड़े विद्वान और आलोचकों का कहना है कि साहित्य से मनुष्य की संवेदना का विकास होता है। अगर हम बाल- साहित्य की चर्चा करें तो यह साहित्य बच्चों के लिए तो अधिक उपयोगी और महत्त्वपूर्ण सिद्ध होता है। आज स्थिति यह है हिन्दी या अन्य भाषा में लिखा जाने वाला बाल- साहित्य बच्चों में कम पढ़ा जा रहा है। जब बात लोरियों की आती है तो उसका भविष्य भी उतना अच्छा नहीं है। आज बाजारीकरण या भूमंडलीकरण का जमाना है, जिसके बढ़ते प्रभाव से मानव जीवन के कोमल तथा संवेदनशील तत्व नष्ट होते जा रहे है शायद यहीं कारण है कि आज लोरी की खनक कम सुनाई दे रही है। इस शोध पत्र में कन्नड लोरी के महत्त्व को दर्शाने की कोशिश की गई है क्योंकि लोरी मनुष्य के भावात्मक एवं बौद्धिक विकास में सहायक होती है।

'लोरी' शब्द संस्कृत के 'लोल' शब्द का अपभ्रंश माना जाता है, जिसका अर्थ हिलाना, डुलाना और थपथपाना होता है। माताओं द्वारा लोरी भी थपथपाते, दुलराते, हिलाते-डुलाते, अपने बच्चों को सुलाने के लिए गाई जाती है। जिसमें माँ की ममता, उसका प्यार भरा स्वर लहरी, स्नेहिल सहजता, सरलता का भाव भरा रहता है। रवीन्द्रनाथ टेगौर जैसे महान कवि के विचार इस प्रकार है- "हमारे अलंकार शास्त्रों में नौ रसों का उल्लेख मिलता है, पर लोरियों में जो रस प्राप्त है वह शास्त्रोक्त रसों के अन्तर्गत नहीं हैं। अभी-अभी जोती हुई जमीन से गंध निकलती है या शिशु के नवनीत कोमल देह से जो स्नेह का उबाल देने वाली गंध है उसे फूल, चन्दन, गुलाबजल, इत्र या धूप की सुगंध के साथ एक श्रेणी में नहीं रखा जा सकता है"। यह तीव्र नहीं है, गाढ़ा

नहीं है, वह बहुत ही स्निग्ध, सरस और युक्ति तथा संगीत से हीन है। ये लोरिया ही है जो रोते हुए अबोध शिशु को चुप कराती है। एक अनजाने अनचाहे सुख को देने की क्षमता रखती है।

माँ या किसी अन्य द्वारा लोरी गाते हुए दी जाने वाली थपकी स्पर्श चिकित्सा का जहाँ काम करती है, वहीं एक एक्यूप्रेशर के रूप में भी राहत भी देती है। लोरी का दूसरा अर्थ हम यह ले सकते हैं कि माँ अपने बच्चे के लिए जो प्रार्थना करती है या उसका हित चाहते हुए गाती है, वही लोरी है। भारत में लगभग सभी भाषाओं में लोरी गाई जाती है, यहां मैंने केवल कन्ड लोरी का जिक्र किया है।

कन्नड साहित्य में अनेक कवियों ने लोरियाँ लिखी, जिन्हें कन्नड़ भाषा में जोगुळ गीत कहा जाता है। लोरी को पालनगीत या लालीगीत भी कहा जाता है। कन्नड़ के प्रसिद्ध कवि कुवेंपु द्वारा लिखित लोरी को देख सकते हैं-

नगु, नगु, नगु

वो मुद्दु मगु।

मोग्गु मोगद निन्न नगे,

हूवु कण्ण जगद हागे।

अर्थात्

हँस दे, हँस दे, हँस दे

ओ मेरे प्यारे राजदुलारे।

खिलते फूलों जैसे तेरी हँसी,

चेहरा तेरे फूलों के गुलदस्ते जैसे।

मलगु मलगेन्न कंद जो ! जो !

मलगु एन्न नंदा जो ! जो !

निद्देयूरदु चेंद जो ! जो !

मुद्दु कंदा मलगु जो ! जो !

अर्थात्

सो जा, सो जा मेरे राजदुलारे जो ! जो !

सो जा मेरी आँखों के तारे जो ! जो !

नींद की नगरी बहुत खूबसूरत है जो ! जो !

मेरे प्यारे राजदुलारे सो जा जो ! जो !

ये दोनों पंक्तियाँ कन्नड़ के प्रसिद्ध कवि कुवेंपु जी की हैं। उन्होंने इस लोरी में माँ की ममता को पूर्ण रूप से उँडेला है। भारत में यह माना जाता है कि लोरी सुनने से बच्चों के मस्तिष्क और मन पर अच्छा प्रभाव पड़ता है। उसे अच्छी अनुभूति होती है। उसे ऐसा लगता है कि नींद में भी उसके साथ अपना कोई है।

अन्य कन्नड़ लोरी में भी हम माँ और बेटे के भावनात्मक संबंधों को देख सकते हैं-

रोते हुए बच्चे को सुलाते हुए-

अळुव कंदन तुटियु हवळद कुडियंगे
कुड़ी हुब्बु बेविनेसळंग। कण्णोट
शिवन कैयलगु होळेदंगे।

अर्थात्

रोते हुए मुन्ने के होंठ मुंगे जैसा
उसके भौंहें कोमल नीम के पत्ते जैसा
और नज़रें शिव के चमकते हाथों जैसा।

अत्तिय मरके हत्तितो गुम्म
हत्तेटु हण्ण मेद्दितो गुम्म
गुम्म बत्तदे कंद सुम्मने मलगु जो ! जो !

अर्थात्

अंजीर के पेड़ पर हव्वा/शैतान बैठा है
एक साथ अनेक फल खा रहा है।
वह शैतान तेरे पास भी आएगा।
इसलिए सो जा जो ! जो !

नज़र उतारते हुए-

कूसेल्ल कुंदण नेत्तल्ल जावूळ
कट्टि केळगाड़ि नेत्तल जावूळ
कट्टि केळगाड़ि बेवतान। नन बाल
होस मित्तिन दृष्टि तेगेदेन।

अर्थात्

मेरा बच्चा इतना नाचा

सारा शरीर पसीने से तर हो गया

उसे नाचता देख सभी मोहित हुए

अब मैं अपने बच्चे की नज़र उतारूँगी

बच्चों के इधर-उधर घूमने-फिरने को कितने खूबसूरती से लोरी में पिरोया गया है-

हरिदु बा चेन्नी मरि हविन हांगे

बिरूदु बावलिने एळकंत-बळुकुत्त

हरिदु बा शिवन मरि हागे

अर्थात् - छोटे साँप की तरह रेंगते

पुरस्कार को खींचते मटकते दौड़ते

आओ शिव के छोटे साँप की तरह

जब अपने शिशु पर ज्यादा प्यार आता है तब माँ उसकी तारीफ करते हुए कहती है-

अत्ततु काडुवनल्ला मत्ते बेडवनल्ला

एत्तिकोळलेंब हठविल्ला-

निन्नंथ हत्तु मक्कळु इरलेनगे।

अर्थात् - रोकर परेशान नहीं करता

बार-बार नहीं मांगता

गोद में बैठने की जिद्द नहीं करता

तेरे जैसे दस बच्चे हो मुझे।

माँ को अपने मायके पर बहुत नाज़ होता है। वह अपनी लोरी में अपने मायके का वर्णन इस तरह करती है-

"याकळुवे किरूबाला सावकार निम्माव

तूकदुंगुरव बेरळिगे- मावय्या

वाकु माड़िसुवा कैगेरडु।"

अर्थात्- क्यों रोती हो छोटी बाला

तेरा मामा साहूकार है

वज़नदार अँगूठी उँगुला को देगा

मामा कंगन बनाएगा दोनों हाथों के।

रोते हुए बच्चे को चुप कराते हुए बड़े नाज़ से कह रही है- रोते क्यों है? तेरा मामा साहूकार है, सोने की अँगूठी और कँगन से तुम्हें सजा देगा ।

माँ को मायके की तरह ससुराल पर भी गर्व है। यहाँ भी रोते हुए बच्चों को चुप कराते कहती है-

- याकळुवे एलेरंग बेकाद्दु निनगुंटु नाकेम्मी करेदा

नोरेहालु- सक्करी नी केळिदाग ना कोड़वे ।

अर्थात्- क्यों रोते हो रंगा, तेरे पास है सब कुछ

चार भैंस का दूध- शक्कर, तू जब भी मांगेगा मैं दूँगी ।

इसे ससुराल पर गर्व है क्योंकि यहाँ उसके लड़के के लिए किसी चीज़ की कमी नहीं है; गाय -भैस दूध, शक्कर, मक्खन से भरा पूरा घर है । जब वह माँगेगा, उसे दूध शक्कर देगी।

बेटा जब थोड़ा बड़ा हो जाता है और खेलने जाता है तो माँ स्वयं उसे खेलने भेजती है और कहती है-

“अंगाला तोळासुवे आड़िबा नन बाला

तेंगिनकाई एळिबोंड तेक्कंडु

बंगारद पाद तोळसुवि ।”

अर्थात् - पाँव धोऊँगी, खेल आओ मेरे बेटे

नारियल पानी लेकर

सोने जैसा तेरा पाँव धोऊँगी ।

इस प्रकार हम देखते हैं कन्नड़ के लोक साहित्य में लोरियों का एक बहुत बड़ा खज़ाना है । लोरी बच्चे के लिए आराम, खुशी और गहरी नींद की एक मनोवैज्ञानिक दवा है। ईश्वर के बाद बच्चों के लिए माँ का स्थान ही सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। नेपोलियन बोनोपार्ट ने कहा था- “यदि फ्रांस मुझे १०० आदर्श माताएं दे दे तो मैं सारी दुनिया को फतह कर लूँगा। लोरियाँ माँ के हृदय की फसले हैं। इनका उगते रहना तथा इनकी सुरक्षा करना एक सांस्कृतिक दायित्व है जिसे निष्ठापूर्वक निभाना प्रत्येक सभ्य नागरिक का कर्त्तव्य है।

संदर्भ ग्रंथ-

1. जनपद गीतांजली- सं.दे.जवरेगौड़ा, साहित्यक अकादेमी, नई दिल्ली- १९७८ ।

2. मद्दुंटे जनना मरणक्कॆ- गुंड्मी चन्द्रशेखर ऐताळ, प्र.जि.अनुसूया, शारदा प्रेस, मंगलूरू- १९७३ ।
3. कर्नाटकदा कोंकणिस हागू जनपद कला प्रकारगळु- (स) श्री प्रेमानंद गड़कर, प्रकाशक, कर्नाटक कोंकणि साहित्य अकादेमी- २०११ ।

****